जस्टिस मोलाना मुफ़्ती मुहम्मद तक़ी साहिब उस्मानी

कुरआन करीम का
ख़त्म शरीफ़ और दुआ

ख़िताब

जस्टिस मौलाना मुफ़्ती मुहम्मद तक़ी उस्मानी

हिन्दी अनुवादः मुहम्मद इमरान क़ासमी

प्रकाशक

फ़रीद बुक डिपो (प्रा. लि.)

422, मटिया महल, उर्दू मार्किट, जामा मस्जिद

देहली-110006

☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆

नाम किताब — कुरआन करीम का ख़त्म शरीफ़ और दुआ

ख़िताब — मौलाना मुहम्मद तक़ी उस्मानी

हिन्दी अनुवाद — मुहम्मद इमरान क़ासमी

संयोजक — मुहम्मद नासिर ख़ान

तायदाद — 2100

प्रकाशन वर्ष — मई 2004

कम्पोज़िंग — इमरान कम्प्यूटर्स मुज़फ़्फ़र नगर (0131-2442408)

>>>>>>>>>>>

प्रकाशक

फ़रीद बुक डिपो प्रा० लि०

422, मटिया महल, उर्दू मार्किट, जामा मस्जिद देहली-110006

फ़ोन आफ़िस, 23289786, 23289159 आवास, 23280786

विषय सूची

कुरआन करीम का ख़त्म शरीफ़

और दुआ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ نَحْمَدُهٗ وَنَسْتَعِيْنُهٗ وَنَسْتَغْفِرُهٗ وَنُؤْمِنُ بِهٖ وَنَتَوَكَّلُ عَلَيْهِ وَنَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنْ شُرُوْرِ اَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّاٰتِ اَعْمَالِنَا، مَنْ يَّهْدِهِ اللّٰهُ فَلَا مُضِلَّ لَهٗ وَمَنْ يُّضْلِلْهُ فَلَا هَادِىَ لَهٗ وَنَشْهَدُ اَنْ لَّآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَنَشْهَدُ اَنَّ سَيِّدَنَا وَنَبِيَّنَا وَمَوْلَانَا مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَعَلٰى اٰلِهٖ وَاَصْحَابِهٖ وَبَارَكَ وَسَلَّمَ تَسْلِيْمًا كَثِيْرًا○ اَمَّا بَعْدُ!

فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيْمِ ○ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

اِنَّآ اَنْزَلْنٰهُ فِىْ لَيْلَةِ الْقَدْرِ ○ وَمَآ اَدْرٰكَ مَا لَيْلَةُ الْقَدْرِ ○ لَيْلَةُ الْقَدْرِ خَيْرٌ مِّنْ اَلْفِ شَهْرٍ ○ تَنَزَّلُ الْمَلٰٓئِكَةُ وَالرُّوْحُ فِيْهَا بِاِذْنِ رَبِّهِمْ مِّنْ كُلِّ اَمْرٍ ○ سَلٰمٌ هِىَ حَتّٰى مَطْلَعِ الْفَجْرِ○ صَدَقَ اللّٰهُ مَوْلَانَا الْعَظِيْمُ○

(سورة القدر)

तमहीद

मोहतरम बुज़ुर्गों और अज़ीज़ भाईयो! इस वक़्त कोई लम्बी-चौड़ी तक़रीर करना मक़सद नहीं है लेकिन अल्लाह तआ़ला

ने हमें और आपको एक बहुत बड़े इनाम से नवाज़ा है और एक बहुत बड़ा करम फ़रमाया है। इस वक़्त उस इनाम और करम पर शुक्र का इज़हार करना मक़सूद है और इस मौक़े से फ़ायदा उठाते हुए अल्लाह तआला के सामने अपने मक़ासिद और हाजतों के लिए दुआ करना मक़सूद है।

बहुत बड़े इनाम से नवाज़ा है

वह इनाम यह है कि इस वक़्त अल्लाह तआला ने अपने फ़ज़्ल व करम से हमें और आपको तरावीह के अन्दर कुरआन करीम मुकम्मल करने की सआदत (सौभाग्य) अता फ़रमाई है। आज जबकि हमारी निगाहें और हमारे ख़्यालात माद्दा-परस्ती (भौतिकवाद) के माहौल में भटके हुए हैं। इस माहौल में कुरआन करीम की तिलावत और तरावीह की इस नेमत का सही-सही अन्दाज़ा हमें और आपको नहीं हो सकता कि यह अल्लाह तआला की कितनी बड़ी नेमत हैं। लेकिन जिस वक़्त ये आँखें बन्द होंगी और अल्लाह तआला की बारगाह में हाज़िरी होगी उस वक़्त अन्दाज़ा होगा कि यह कुरआन करीम की तिलावत, यह रोज़ा, यह तरावीह, ये नमाज़ें, यह तस्बीह, ये सब कितनी बड़ी दौलत हैं। इसलिए कि वह दुनिया ऐसी है कि वहाँ की क्रन्सी रुपया-पैसा नहीं है, बल्कि वहाँ की क्रन्सी ये नेकियाँ हैं और ये आमाल हैं। ये नमाज़ें, ये रोज़े, ये तस्बीहात, ये तरावीह, ये सज्दे, यह तिलावत, ये चीज़ें वहाँ काम आने वाली हैं। यह रुपया-पैसा वहाँ पर काम आने वाला नहीं।

"तरावीह" एक बेहतरीन इबादत

यूँ तो रमज़ान मुबारक को अल्लाह तआला ने ऐसा बनाया है

और किसी हालत में इतना क़रीब नहीं होता। कुरआन करीम में सूरः अ़लक़ की आख़िरी आयत जो आयते सज्दा है, उसमें अल्लाह तआ़ला ने इरशाद फ़रमायाः

तर्जुमाः सज्दा करो और मेरे क़रीब आ जाओ।

(सूरः अ़लक़ आयत 12)

यह कितना प्यारा और मुहब्बत का जुमला है कि सज्दा करो और मेरे पास आ जाओ। इसलिए अल्लाह तआ़ला की बारगाह में निकटता हासिल करने का इससे बेहतर ज़रिया और कोई नहीं है कि इनसान सज्दे में चला जाए। जिस वक़्त बन्दे ने अल्लाह तआ़ला के सामने सज्दे में पेशानी (माथा) टेक दी तो उस दम सारी कायनात उस पेशानी के नीचे आ गई।

"नमाज़" मोमिन की मेराज है

हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को अल्लाह तआ़ला ने "मेराज" अ़ता फ़रमाई जिसमें आपको सातों आसमानों से भी ऊपर "सिद्‌रतुल्- मुन्तहा" से भी आगे पहुँचाया। जहाँ हज़रत जिब्राईल अ़लैहिस्सलाम भी आपका साथ न दे सके। उस मुक़ाम तक पहुँचाया। जब आप वापस तशरीफ़ लाने लगे तो हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने ज़बाने हाल से अल्लाह तआ़ला से यह दरख़्वास्त की ऐ अल्लाह! आपने मुझे तो अपनी नज़दीकी का यह मुक़ाम अ़ता फ़रमा दिया लेकिन मेरी उम्मत का क्या होगा? तो उस वक़्त अल्लाह तआ़ला ने आपकी उम्मत के लिए जो तोहफ़ा अ़ता फ़रमाया वह पाँच नमाज़ों का तोहफ़ा अ़ता फ़रमाया। और इन नमाज़ों में सज्दे का तोहफ़ा अ़ता फ़रमाया और यह

कि इसका हर-हर लम्हा रहमतों का लम्हा है। बरकतों का लम्हा है। लेकिन रमज़ान मुबारक में जो खुसूसी इबादतें शरीअ़त ने मुक़र्रर कीं उनमें यह तरावीह की इबादत एक अ़जीब व ग़रीब शान रखती है। आ़म दिनों के मुक़ाबले में इन दिनों के अन्दर यह नमाज़ जनाब नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने सुन्नत क़रार दी है। हदीस शरीफ़ में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमायाः

तर्जुमाः अल्लाह तआ़ला ने तुम्हारे लिए रमज़ान के दिनों में रोज़े फ़र्ज़ किए और मैंने तुम्हारे लिए रमज़ान की रातों में खड़े होकर इबादत करने को सुन्नत क़रार दिया। (निसाई शरीफ़)

यह सुन्नत ऐसी है कि इसके नतीजे में और दिनों के मुक़ाबले में बीस रकअ़तें ज़्यादा पढ़ने की सआ़दत हासिल हो रही है, और बीस रकअ़तों का मतलब यह है कि हर ईमान वाले को रोज़ाना चालीस सज्दे ज़्यादा करने की तौफ़ीक़ हासिल हो रही है। और अगर पूरे महीने का हिसाब लगाया जाए और महीने को तीस दिन का शुमार किया जाए तो एक महीने में एक ईमान वाले को बारह सौ सज्दे ज़्यादा करने की तौफ़ीक़ अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से अ़ता हो रही है।

"सज्दा" एक बहुत बड़ी नेमत

और यह "सज्दा" ऐसी बड़ी नेमत है कि इस ज़मीन पर इससे ज़्यादा बड़ी नेमत कोई और नहीं हो सकती। हदीस शरीफ़ में नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इरशाद फ़रमाया कि बन्दा अल्लाह से जितना क़रीब सज्दे की हालत में होता है

ऐलान फ़रमा दिया गया कि "नमाज़ मोमिनों की मेराज है" अगरचे हमने आपको यहाँ बुलाकर मेराज अ़ता फ़रमाई लेकिन आपकी उम्मत के लिए यह ऐलान है कि जो बन्दा मेरे नज़दीक होना चाहता है वह जब सज्दे में सर रख देगा तो उसकी मेराज हो जाएगी। जब बन्दे ने सज्दे में अल्लाह तआ़ला के सामने सर रख दिया तो बस इससे बड़ी दौलत और कोई नहीं है।

अल्लाह मियाँ ने मुझे प्यार कर लिया

हमें तो इस दौलत के अ़ज़ीम होने का अन्दाज़ा नहीं है, इसलिए कि दिलों पर ग़फ़लत के पर्दे पड़े हुए हैं। जिन लोगों को अल्लाह तआ़ला इसकी लज़्ज़त और मिठास अ़ता फ़रमाते हैं उनको पता होता है कि यह सज्दा क्या चीज़ है। हज़रत मौलाना फ़ज़लुर्रहमान साहिब गंज-मुरादाबादी रहमतुल्लाहि अ़लैहि जो बड़े दर्जे के औलिया-अल्लाह में से गुज़रे हैं। एक बार हज़रत मौलाना अशरफ़ अ़ली थानवी रहमतुल्लाहि अ़लैहि उनकी ख़िदमत में हाज़िर हुए तो वह चुपके से कहने लगे कि मियाँ अशरफ़ अ़ली! क्या बताऊँ जब सज्दा करता हूँ तो ऐसा लगता है कि अल्लाह तआ़ला ने मुझे प्यार कर लिया। उनको सज्दे के अन्दर यह दौलत नसीब होती थी।

यह पेशानी एक ही चौखट पर टिकती है

हज़रत ख़्वाजा अ़ज़ीज़ुल् हसन साहिब मजज़ूब रहमतुल्लाहि अ़लैहि जो हज़रत हकीमुल उम्मत मौलाना अशरफ़ अ़ली थानवी के ख़ास ख़लीफ़ा थे, उनका एक शे'र है:

अगर सज्दे में सर रख दूँ   ज़मीन को आसमाँ कर दूँ

बहरहाल! यह सज्दा मामूली चीज़ नहीं है। यह पेशानी किसी और जगह पर नहीं टिकती। यह पेशानी सिर्फ़ एक ही बारगाह में, एक ही चौखट पर, एक ही आस्ताने पर टिकती है। और उस आस्ताने पर टिकने के नतीजे में उसको जो निकटता की दौलत हासिल होती है उस दौलत के आगे सारी दुनिया की दौलतें हेच (बे-हक़ीक़त) हैं।

अल्लाह तआ़ला अपने कलाम की तिलावत सुनते हैं

हमारे हज़रत डॉक्टर अ़ब्दुल हई साहिब रहमतुल्लाहि अ़लैहि फ़रमाया करते थे कि रमज़ान मुबारक में अल्लाह तआ़ला ने हमें और आपको रोज़ाना अपनी नज़दीकी के चालीस मुक़ामात ज़्यादा अ़ता फ़रमाए हैं। हर ईमान वाले को इस तरावीह की बदौलत रोज़ाना अल्लाह की निकटता के चालीस मुक़ामात ज़्यादा हासिल हो रहे हैं। यह मामूली दौलत नहीं।

फिर इस तरावीह में ये अल्लाह की नज़दीकी के मुक़ामात तो थे ही साथ-साथ यह हुक्म दे दिया कि इस तरावीह में मेरा कलाम पढ़कर इसको पूरा करो। हदीस शरीफ़ में आता है कि अल्लाह तआ़ला किसी चीज़ को इतनी तवज्जोह के साथ नहीं सुनते जितनी तवज्जोह के साथ अपने कलाम की तिलावत को सुनते हैं। इसलिए तरावीह के मौक़े पर अल्लाह तआ़ला की रहमत मुतवज्जह होती है। अल्लाह तआ़ला की नज़दीकी हासिल हो रही होती है।

क़ुरआन शरीफ़ के ख़त्म के मौक़े पर दो काम करें

आज अल्हम्दु लिल्लाह क़ुरआन करीम पूरा हो गया। हमने

ग़फ़लत के आलम में सुनकर पूरा कर लिया। हदीस शरीफ़ में है कि एक-एक हर्फ़ पर दस-दस नेकियाँ लिखी जाती हैं। इसलिए यह मामूली नेमत नहीं है जो आज ख़त्मे क़ुरआन के मौक़े पर हमें और आपको हासिल हो रही है। इस नेमत का शुक्र अदा करो।

जब भी अल्लाह तआ़ला किसी इबादत की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाएँ तो बुज़ुर्गाने दीन का कहना है कि उस मौक़े पर दो काम करने चाहिएँ। एक यह कि उस इबादत की तौफ़ीक़ मिलने पर अल्लाह तआ़ला का शुक्र अदा करना चाहिए और यह कहना चाहिए कि ऐ अल्लाह! मैं तो इस क़ाबिल नहीं था मगर आपने अपने फ़ज़्ल से मुझे इस इबादत की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमा दी। दूसरे यह कि इस्तिग़फ़ार करो और यह कहो कि ऐ अल्लाह! आपने तो मुझे इबादत की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाई थी लेकिन इस इबादत का जो हक़ था वह मुझसे अदा न हो सका। इस इबादत के जो हुक़ूक़ और आदाब थे वह मैं पूरे न कर सका। इसमें मुझसे कोताहियाँ और ग़लतियाँ हुईं। ऐ अल्लाह! इस पर मुझे माफ़ फ़रमा।

इबादत से इस्तिग़फ़ार

क़ुरआन करीम ने "सूरः ज़ारियात" में अल्लाह के बन्दों की बड़ी तारीफ़ फ़रमाई है। चुनाँचे फ़रमाया:

"यानी अल्लाह तआ़ला के नेक बन्दे रात के वक़्त बहुत कम सोते हैं बल्कि रात के अकसर हिस्से में अल्लाह की इबादत में खड़े रहते हैं। और जब सेहरी का वक़्त हो जाता है तो उस

वक़्त इस्तिग़फ़ार करते हैं और अल्लाह तआ़ला से मग़फ़िरत तलब करते हैं।" (सूरः ज़ारियात आयत 17, 18)

हज़रत आ़यशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा ने पूछा या रसूलल्लाह! यह इस्तिग़फ़ार (मग़फ़िरत और माफ़ी माँगने) का क्या मौक़ा है? इस्तिग़फ़ार तो उस वक़्त होता है जब किसी से कुछ गुनाह हुआ हो। कोई ग़लती हुई हो। यह तो सारी रात इबादत में अल्लाह तआ़ला के सामने खड़े रहे तो अब सुबह के वक़्त इस्तिग़फ़ार क्यों कर रहे हैं? जवाब में नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि ये लोग अपनी इबादत से इस्तिग़फ़ार कर रहे हैं कि या अल्लाह! हमने इबादत तो की लेकिन इबादत का जो हक़ था वह हम से अदा न हुआ। इसलिए अपनी इस कोताही और ग़फ़लत पर इस्तिग़फ़ार कर रहे हैं।

इबादत का हक कौन अदा कर सकता है?

इसलिए जिस इबादत की तौफ़ीक़ हो जाए उस तौफ़ीक़ पर अल्लाह तआ़ला का शुक्र अदा करो और अपनी कोताही पर इस्तिग़फ़ार करो कि या अल्लाह! इबादत का हक़ हमसे अदा न हो सका। और कौन शख़्स है जो इबादत का हक़ अदा कर सके? जबकि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम का यह हाल था कि सारी रात इस तरह खड़े होकर इबादत करते थे कि पाँव पर वरम (सूजन) आ जाता था। इसके बावजूद आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम फ़रमाते थे कि:

"हम इबादत का हक़ अदा न कर सके।"

इसलिए हर इबादत के मौके पर शुक्र भी करो और उसके

साथ-साथ इस्तिग़फ़ार भी करो।

हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु का क़ौल

मैंने अपने शैख़ हज़रत डॉक्टर अ़ब्दुल हई साहिब रहमतुल्लाहि अ़लैहि से हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अ़न्हु का एक क़ौल सुना कि हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अ़न्हु फ़रमाया करते थे कि जब कोई बन्दा इबादत करने के बाद यह कहता है "अल्हम्दु लिल्लाह, अस्तग़्फ़िरुल्लाह" तो शैतान कहता है कि इसने मेरी कमर तोड़ दी।

वजह इसकी यह है कि शैतान का हमला दो ही तरह से होता है, या तो इस तरह हमला करता है कि इबादत के नतीजे में इनसान के दिल में गुरूर पैदा कर देता है कि मैंने बड़ी इबादत कर ली। मुझसे बड़ा काम हो गया और मैं तो आला मुक़ाम तक पहुँच गया।

जब दिल में यह गुरूर पैदा हुआ तो सारी इबादत बेकार हो गयी। इस गुरूर का रास्ता लफ़्ज़ "अल्हम्दु लिल्लाह" से बन्द हो गया। और इसके ज़रिये यह इक़रार कर लिया कि जो इबादत मैंने अदा की वह असल में मेरे बाज़ू की कुव्वत का करिश्मा नहीं है, बल्कि ऐ अल्लाह! यह इबादत आपके करम और तौफ़ीक़ से अन्जाम पाई है।

रमज़ान की इबादतों पर शुक्र अदा करो

कितने लोग ऐसे हैं कि रमज़ान मुबारक आया और चला गया लेकिन इसके बावजूद उनके घर में पता नहीं चला कि कब रमज़ान मुबारक आया था और कब चला गया। लेकिन अल्लाह

तआ़ला का फ़ज़्ल व करम है कि अल्लाह तआ़ला ने हमें उन लोगों में से नहीं बनाया। अल्लाह तआ़ला का करम है कि उसने हमारी सलाहियत के अनुसार हमीं जैसी-तैसी इबादत करने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाई। रोज़े रखने की, तरावीह पढ़ने की, तिलावत करने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाई। इस पर शुक्र अदा करो और कहो "अल्हम्दु लिल्लाह" ऐ अल्लाह! आपका करम और शुक्र है कि आपने हमें यह इबादत करने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाई।

बहरहाल! शैतान का एक हमला तो दिल में घमण्ड पैदा करने के ज़रिये होता है।

अपनी कोताहियों पर इस्तिग़फ़ार करो

शैतान का दूसरा हमला यह होता है कि वह इनसान के दिल में यह ख़्याल डालता है कि तेरी नमाज़ क्या? तेरा रोज़ा क्या? तूने नमाज़ क्या पढ़ी, तूने टक्करें मारीं और ग़फ़लत के आ़लम में नमाज़ पढ़ ली और रोज़ा रख लिया। तूने इबादत का हक़ अदा नहीं किया। यह ख़्याल डालकर उसके अन्दर मायूसी पैदा कर देता है। इस मायूसी का तोड़ "अस्तग़्फ़िरुल्लाह" है। यानी बेशक इबादत के अदा करने में मेरी तरफ़ से कोताही हुई लेकिन मैं तो कोताहियों का पुलिन्दा हूँ। ऐ अल्लाह! इन कोताहियों की तरफ़ से मैं आपके सामने इस्तिग़फ़ार करता हूँ। और इस्तिग़फ़ार की ख़ासियत यह है कि जिस कोताही से इस्तिग़फ़ार किया जाए अल्लाह तआ़ला उस कोताही को नामा-ए-आमाल से मिटा देते हैं। इसलिए जो शख़्स इस्तिग़फ़ार करने का आ़दी हो उसकी कोताहियाँ और गुनाह नामा-ए-आमाल से मिटते रहते हैं।

इसलिए फ़रमाया कि जो शख़्स इबादत करने के बाद ये दो कलिमात ज़बान से अदा कर ले- एक "अल्हम्दु लिल्लाह" और दूसरे "अस्तग़्फ़िरुल्लाह"। ऐ अल्लाह! आपकी तौफ़ीक़ पर शुक्र है और मेरी कोताहियों पर इस्तिग़्फ़ार है। तो उसके बाद वह इबादत अल्लाह तआ़ला की बारगाह में इन्शा-अल्लाह क़बूल हो जाएगी और शैतान की कमर टूट जाएगी।

उनकी रहमत पर नज़र रहनी चाहिए

अल्लाह का शुक्र है! अल्लाह तआ़ला ने हमें अपने फ़ज़्ल व करम से रमज़ान मुबारक में इबादत करने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाई। हमारी तरफ़ से ग़फ़लत ही ग़फ़लत है। कोतही ही कोताही है। लेकिन बक़ौल हज़रत डॉक्टर अ़ब्दुल हई साहिब के, हम अपनी ग़फ़लत और कोताही को देखें या उनकी रहमत को देखें। अरे उनकी रहमत ऐसी बड़ी और ज़बरदस्त है कि जिसकी कोई हद व सीमा नहीं। उसके मुक़ाबले में हम अपनी कोताहियों को क्यों लेकर बैठ जाएँ और इसका मुराक़बा क्यों करें? अरे हम अल्लाह की रहमत का मुराक़बा (ध्यान) करें।

बहरहाल! आज हम यहाँ दो काम करने के लिए जमा हुए हैं- एक उसकी तौफ़ीक़ पर शुक्र अदा करने के लिए और दूसरे अपनी कोताहियों पर इस्तिग़फ़ार करने के लिए। इन्शा-अल्लाह अगर हमने ये दो काम कर लिए तो फिर अल्लाह तआ़ला की रहमत से उम्मीद रखनी चाहिए कि अल्लाह तआ़ला ने जो अनवार व बरकतें, जो तजल्लियात, जो रहमतें और जो अज्र व सवाब इस तरावीह में और क़ुरआन करीम की तिलावत में रखा

है इन्शा-अल्लाह हमें और आपको उससे मेहरूम नहीं फ़रमाएँगे।

दुआ़ की क़बूलियत के मौक़े जमा हैं

आज की रात रमज़ान मुबारक की रात है। अ़श्रा-ए-अख़ीरा (आख़िरी दशक) की भी रात है और अ़श्रा-ए-अख़ीरा की भी 'ताक़' रात है (ताक़ रात उसको कहते हैं जो बे-जोड़ हो जैसे इक्कीस, तैईस, पच्चीस, सत्ताईस वग़ैरह) जिसमें शबे क़द्र होने की भी उम्मीद है, और क़ुरआन करीम के ख़त्म का मौक़ा भी है। इसलिए अल्लाह तआ़ला की रहमत से उम्मीद है कि इस मौक़े पर जो दुआ़ की जाएगी इन्शा-अल्लाह तआ़ला ज़रूर क़बूल होगी। हदीस शरीफ़ में आता है कि कभी-कभी अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से रहमत की हवाएँ चलती हैं और उन हवाओं के चलने के दौरान जो बन्दा अल्लाह तआ़ला की तरफ़ रुजू करता है तो अल्लाह तआ़ला की रहमत उसको ढाँप लेती है। उम्मीद है कि ये लम्हे भी अल्लाह तआ़ला की रहमत की हवाओं के लम्हे हैं। इन्शा-अल्लाह जो दुआ़ की जाएगी वह दुआ़ क़बूल होगी।

ख़ास तवज्जोह से दुआ़ करें

अब हम सब मिलकर एहतिमाम (ख़ास तवज्जोह और ध्यान) के साथ अल्लाह तआ़ला से दुआ़ करते हैं और इस दुआ़ के अन्दर अपनी ज़ाती हाजतों को भी अल्लाह तआ़ला से माँगें, अपने यार-रिश्तेदारों के लिए भी दुआ़ करें। अपने दोस्त व अहबाब के लिए भी दुआ़ करें। अपने मुल्क व क़ौम के लिए भी दुआ़ करें। पूरी मुस्लिम दुनिया इस समय दुश्मनों से घिरी हुई है इसके लिए दुआ़ करें कि अल्लाह तआ़ला इन दुश्मनों से इस्लाम

को बचाए। जितने लोग हैं जो इस वक़्त मुख़्तलिफ़ मुल्कों में अल्लाह तआ़ला के रास्ते में दीन की ख़िदमत और इस्लाम के लिए कोशिश कर रहे हैं, उनके लिए दुआएँ फ़रमाएँ कि अल्लाह तआ़ला उनकी मुश्किलों को दूर फ़रमाए और उनको कामयाबी अ़ता फ़रमाए। आमीन।

सामूहिक दुआ़ भी जायज़ है

दुआ़ में अफ़ज़ल यह है कि हर आदमी व्यक्तिगत तौर पर दुआ़ करे। बस वह हो और उसका अल्लाह हो। तीसरे आदमी का बीच में वास्ता न हो, और इज्तिमाई (सामूहिक) दुआ़ सुन्नत नहीं है। लेकिन जहाँ मुसलमान जमा हों और वहाँ सब मिलकर इकट्ठे दुआ़ कर लें तो यह भी कोई नाजायज़ बात नहीं है, इसलिए कि कभी-कभी आदमी के दिल में बहुत-सी दुआएँ नहीं आतीं तो वह दूसरे की दुआ़ पर "आमीन" कह देता है तो अल्लाह तआ़ला उसको भी उस दुआ़ की बरकतें अ़ता फ़रमा देते हैं। इसलिए इस वक़्त इज्तिमाई (सामूहिक) दुआ़ की जा रही है, इसमें पहले वे दुआएँ की जाएँगी जो हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से साबित हैं, उसके बाद उर्दू में अपनी हाजतों की दुआएँ होंगी, उसके बाद हर शख़्स अपनी-अपनी हाजत अल्लाह तआ़ला से माँगेगा।

दुआ़ से पहले दुरूद शरीफ़

सब हज़रात पहले तीन-तीन बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लें।

अल्लाहुम्-म सल्लि अ़ला मुहम्मदिंव्-व अ़ला आलि मुहम्मदिन् कमा सल्लै-त अ़ला इब्राही-म व अ़ला आलि इब्राही-म इन्न-क

हमीदुम् मजीद।

अल्लाहुम्-म सल्लि अ़ला मुहम्मदिंव्-व अ़ला आलि मुहम्मदिन् कमा सल्लै-त अ़ला इब्राही-म व अ़ला आलि इब्राही-म इन्न-क हमीदुम् मजीद।

अल्लाहुम्-म सल्लि अ़ला मुहम्मदिंव्-व अ़ला आलि मुहम्मदिन् कमा सल्लै-त अ़ला इब्राही-म व अ़ला आलि इब्राही-म इन्न-क हमीदुम् मजीद।

अ़रबी में दुआ़एँ

रब्बना ज़लम्ना अन्फु-सना व इल्लम् तग़्फिर् लना व तर्हम्ना ल-नकूनन्-न मिनल् ख़ासिरीन। रब्बना आतिना फ़िद्दुन्या ह-स-नतंव्-व फ़िल् आख़ि-रति ह-स-नतंव्-व क़िना अ़ज़ाबन्नार। रब्बना ला तुज़िग् क़ुलूबना बअ्-द इज़् हदैतना व हब् लना मिल्-लदुन्-क रह्मतन् इन्न-क अन्तल् वह्हाब।

अल्लाहुम्-म इन्ना नस्तईनु-क अ़ला ताअ़ति-क। अल्लाहुम्-म अ-इन्ना अ़ला ज़िक्रि-क व शुक्रि-क व हुस्नि इबादति-क। अल्लाहुम्-म इन्ना नस्अलु-क तमामल् आ़फ़ियति व नस्अलु-क दवामल् आ़फ़ियति व नस्अलुकश्शुक्-र अ़लल् आ़फ़ियति। अल्लाहुम्मक्फ़िना बि-हलालि-क अ़न् हरामि-क, व अग़्निना बिफ़ज़्लि-क अ़म्मन् सिवा-क या अर्हमर्राहिमीन। अल्लाहुम्-म इन्ना नस्अलुकत्तौफ़ी-क लिमहाब्बि-क मिनल् आमालि व सिद्क़त्तवक्कुलि अ़लै-क व हुस्नज़्ज़न्नि बि-क। अल्लाहुम्मफ़्तह् मसामि-अ़ क़ुलूबिना लिज़िक्रि-क वर्ज़ुक़्ना ताअ़-त-क व ताअ़-त रसूलि-क व अ़-मलन् बिकिताबि-क। अल्लाहुम्मज्अ़ल्ना नख़्शा-क क-अन्ना

नरा-क अ-बदन् हत्ता नल्क़ा-क व असइदना बितक़्वा-क व ला तुश्क़िना बिमअ़सियति-क या अर्हमर्राहिमीन।

अल्लाहुम्मक़्सिम् लना मिन् ख़श्यति-क मा तहूलु बिही बैनना व बै-न मआ़सी-क। व मिन् ताअ़ति-क मा तुबल्लिगुना बिही जन्नत-क। व मिनल् यक़ीनि मा तुहव्विनु बिही अ़लैना मसाइबद्दुन्या। व मत्तिअ्ना बिअस्माअिना व अब्सारिना व कुव्वातिना मा अह्यैतना। वज्अ़ल्हुल् वरि-स मिन्ना। वज्अ़ल् सारना अ़ला मन् ज़-ल-मना। वन्सुर्ना अ़ला मन् आ़दाना। व ला तज्अ़ल् मुसीब-तना फ़ी दीनिना व ला तज्अ़लिद्दुन्या अक्ब-र हम्मिना व ला मब्ल-ग़ इल्मिना व ला ग़ाय-त रग़्बतिना व ला तुसल्लितु अ़लैना मन् ला यर्हमुना।

अल्लाहुम्-म ज़िद्ना व ला तन्क़ुस्ना व अक्रिम्ना व ला तुहिन्ना व अअ्तिना व ला तह्रिम्ना व आसिर्ना व ला तुअ्सिर् अ़लैना। व अर्ज़िना वर्-ज़ अ़न्ना या अर्हमर्राहिमीन। अल्लाहुम्-म आनिस् वह्श-तना फ़ी क़ुबूरिना। अल्लाहुम्मर्हम्ना बिल्-क़ुरआनिल् अ़ज़ीमि वज्अ़ल्हु लना इमामंव्-व नूरंव्-व हुदंव्-व रह्मतन्। अल्लाहुम्-म ज़क्किर्ना मिन्हु मा नसीना व अ़ल्लिम्ना मिन्हु मा जहिल्ना वर्ज़ुक़्ना तिलाव-तहू आनाअल्लैलि व आनाअन्नहारि वज्अ़ल्हु लना हुज्जतंय्-या रब्बल् आ़लमीन।

अल्लाहुम्मज्अ़लिल् क़ुरआनल् अ़ज़ी-म रबी-अ़ क़ुलूबिना व जिला-अ अह्ज़ानिना या अर्हमर्राहिमीन। अल्लाहुम्-म इन्ना नस्अलु-क अन् तुख़ल्लितल् क़ुरआ-न बिलुहूमिना व दिमाइना व अस्माइना व अब्सारिना व तस्तअ्मिलु बिही अज्सादना बिहौलि-क

व कुव्वति-क या अर्हमर्राहिमीन।

या अल्लाहु या अर्हमर्राहिमी-न, या ग़यासल् मुस्तग़ीसी-न, या अमानल् मुस्तजीरी-न, या मुजी-ब दअ्वतिल् मुज़्तर्री-न, रहमानद्दुन्या व रहीमहा, इर्हम्हा बिरह्मतिन् तुग़नीना बिहा अन् रह्मति मन् सिवा-क।

अल्लाहुम्-म ला तज्अल्ना बिदुआइ-क शक़िय्या। व कुन् लना रऊफ़न् रहीमन्। या ख़ैरल् मस्ऊली-न, व या ख़ैरल् मुअ्ती-न इलै-क नश्कू ज़ुअ्-फ़ कुव्वतिना व क़िल्ल-त हीलतिना। रब्बना तक़ब्बल् दअ्व-तना वग़्सिल् हौब-तना व अजिब् दअ्व-तना व सब्बित् हुज्ज-तना व सद्दिद् लिसानना या अर्हमर्राहिमीन।

अल्लाहुम्-म इन्ना नस्अलु-क मिन् ख़ैरि मा स-अ-ल-क मिन्हु अ़ब्दु-क व नबिय्यु-क मुहम्मदुन् सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्ल-म व नऊज़ु बि-क मिन् शर्रि मस्तआज़-क मिन्हु अ़ब्दु-क व नबिय्यु-क मुहम्मदुन् सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम। रब्बना तक़ब्बल् मिन्ना इन्न-क अन्तस्समीउल् अ़लीम। व तुब् अ़लैना इन्न-क अन्तत्तव्वाबुर्रहीम। व सल्लल्लाहु तआ़ला अ़ला ख़ैरि ख़ल्क़िही मुहम्मदिंव्-व अ़ला आलिही व अस्हाबिही अज्मईन। आमीन। बिरह्मति-क या अर्हमर्राहिमीन।

उर्दू में दुआएँ

या अर्हमर्राहिमीन! अपने फ़ज़्ल व करम से और अपनी रहमत से हमारे तमाम गुनाहों को माफ़ फ़रमा। ऐ अल्लाह! अपनी रहमत से हमारी तमाम ख़ताओं को माफ़ फ़रमा। ऐ अल्लाह! हमारी तमाम कोताहियों को माफ़ फ़रमा। ऐ अल्लाह! हमारे तमाम

अगले-पिछले, छोटे-बड़े, खुले-छुपे, हर तरह के गुनाहों को माफ़ फ़रमा। ऐ अल्लाह! अपनी रहमत से हमको और हमारे घर वालों को और हमारे मुताल्लिक़ीन और अहबाब सबको अपनी मग़फ़िरते कामिला अ़ता फ़रमा। ऐ अल्लाह! आपने रमज़ान मुबारक के महीने में जिन बेशुमार इनसानों की मग़फ़िरत के वायदे फ़रमाए हैं, ऐ अल्लाह! अपनी रहमत से हमें भी उनमें शामिल फ़रमा। ऐ अल्लाह! हमारे इस्तेहक़ाक़ (पात्रता) पर नज़र न फ़रमा, अपनी रहमत पर नज़र फ़रमा।

ऐ अल्लाह! अपने फ़ज़्ल व करम से मग़फ़िरते कामिला अ़ता फ़रमा। ऐ अल्लाह! रमज़ान के आख़िरी दशक में जिन लोगों को आप जहन्नम से रिहाई का परवाना अ़ता फ़रमाते हैं, ऐ अल्लाह! हम सबको और हमारे घर वालों को और मुताल्लिक़ीन और अहबाब को उनमें शामिल फ़रमा। या अर्हमर्राहिमीन! जो अनवार और बरकतें आपने इस मुबारक महीने में रखी हैं वे सब हमें अ़ता फ़रमा और उनसे मेहरूम न फ़रमा।

ऐ अल्लाह! इस मुबारक महीने में जिन-जिन इबादतों की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाई यह सब आपका करम व इनाम है। ऐ अल्लाह! अपनी रहमत से उनको क़बूल फ़रमा। और जो कोताहियाँ हो गईं अपनी रहमत से उनको माफ़ फ़रमा।

ऐ अल्लाह! हमारी तरावीह को क़बूल फ़रमा, तिलावते क़ुरआने करीम को अपनी रहमत से क़बूल फ़रमा और जो ज़िक्र की तौफ़ीक़ हुई अपनी रहमत से उसको क़बूल फ़रमा। ऐ अल्लाह! रमज़ान की जो बाक़ी घड़ियाँ हैं उनसे सही मायने में

फ़ायदा उठाने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमा। उन घड़ियों में गुज़रे हुए की तलाफ़ी की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमा।

ऐ अल्लाह! अपने फ़ज़्ल व करम से तमाम मौजूद हज़रात को उनके तमाम जायज़ मक़ासिद में कामयाबी अ़ता फ़रमा। ऐ अल्लाह! जो लोग अपनी- अपनी हाजतें लेकर आए हैं अपनी रहमत से उन सबको पूरा फ़रमा। ऐ अल्लाह! हम में और हमारे मुताल्लिक़ीन और अहबाब में जो-जो बीमार हैं उन सबको अपनी रहमत से शिफ़ा-ए-कामिला अ़ता फ़रमा। ऐ अल्लाह! उनको तन्दुरुस्ती अ़ता फ़रमा। ऐ अल्लाह! जो तंगदस्त हैं उनकी तंगदस्ती को दूर फ़रमा। ऐ अल्लाह! जो मोहताज और ज़रूरत-मन्द हैं उनकी ज़रूरत और मोहताजी दूर फ़रमा। ऐ अल्लाह! जो क़र्ज़ में फंसे हुए हैं उनके क़र्ज़ों की अदायगी का सामान फ़रमा। ऐ अल्लाह! जो बेरोज़गार हैं उनको रोज़गार अ़ता फ़रमा। ऐ अल्लाह! जो बे-औलाद हैं उनको नेक औलाद अ़ता फ़रमा।

या अर्हमर्राहिमीन! जो-जो दुआ़एँ इस मुबारक महीने में माँगने की तौफ़ीक़ हुई अपनी रहमत से उन सारी दुआ़ओं को क़बूल फ़रमा।

ऐ अल्लाह! इस रमज़ान के दिनों में और रातों में जो दुआ़एँ करने की हमें तौफ़ीक़ हुई ऐ अल्लाह! उन सब दुआ़ओं को क़बूल फ़रमा। ऐ अल्लाह! जो हाजतें हमारे दिलों में थीं और हम उनको आप से नहीं माँग सके उनको क़बूल फ़रमा। ऐ अल्लाह! इस रमज़ान के महीने में आपके नेक बन्दों ने जहाँ कहीं जो दुआ़एँ

माँगीं और वे दुआएँ हमारे हक़ में मुनासिब और बेहतर हों ऐ अल्लाह! अपनी रहमत से उनको भी हमारे हक़ में कबूल फ़रमा। ऐ अल्लाह! किसी रहमत से मेहरूम न फ़रमा।

या अर्हमर्राहिमीन! अपने फ़ज़्ल व करम से इस कुरआन करीम को जिन-जिन लोगों ने पढ़कर ख़त्म किया उनको दुनिया व आख़िरत में बेहतरीन बदला अ़ता फ़रमा। उनको इस कुरआन करीम के अनवार व बरकतें अ़ता फ़रमा। ऐ अल्लाह! सुनने वालों को भी इसकी बरकतों से नवाज़ दे।

ऐ अल्लाह! अपने कलिमे को सरबुलन्द फ़रमा। ऐ अल्लाह! आ़लमे इस्लाम दुश्मनों के जिस शिकन्जे में है अपनी रहमत से उस शिकन्जे को तोड़ दे। ऐ अल्लाह! मुसलमानों को सरबुलन्दी अ़ता फ़रमा, इ़ज़्ज़त व शौकत अ़ता फ़रमा। अपने दीन की तरफ़ लौटने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमा। ऐ अल्लाह! अपनी रहमत से दिलों को फेर दे, दिलों में दीन की बड़ाई और मुहब्बत पैदा फ़रमा और दीन पर चलने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमा।

ऐ अल्लाह! सब कुछ आपके क़ब्ज़ा-ए-कुदरत में है। दिल भी और दिमाग़ भी आपके क़ब्ज़ा-ए-कुदरत में है। आमाल भी आपके क़ब्ज़ा-ए- कुदरत में हैं। हमारे दिलों हमारे दिमाग़ों और हमारे आमाल को दीन के रुख़ पर डाल दे। ऐ अल्लाह! अपनी रहमत से इस्लाम को सरबुलन्द फ़रमा। मुसलमानों को सरबुलन्द फ़रमा। ऐ अल्लाह! तमाम मौजूद हज़रात की हाजतों को पूरा फ़रमा। उनकी दिली मुरादों को पूरा फ़रमा।

ऐ अल्लाह! जिन-जिन लोगों ने हमसे दुआ के लिए कहा है

उन सब की दिली मुरादों को पूरा फ़रमा।

ऐ अल्लाह! अपनी रहमत से इस दारुल उलूम को ज़ाहिरी और बातिनी तरक़्क़ी अ़ता फ़रमा। ऐ अल्लाह! इस दारुल उलूम को दीन की ख़िदमत की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमा। ऐ अल्लाह! यहाँ के उस्तादों और तालिब-इल्मों और मुलाज़िमीन को सच्चाई और इख़्लास अ़ता फ़रमा। ऐ अल्लाह! इस दारुल उलूम को दीन की ख़िदमत के लिए क़बूल फ़रमा। ऐ अल्लाह! यहाँ से आपके दीन के ख़ादिम और अल्लाह वाले पैदा फ़रमा। दीन पर अ़मल करने वाले पैदा फ़रमा। ऐ अल्लाह! इस दारुल उलूम के तमाम मन्सूबों को आ़फ़ियत और सहूलियत के साथ पर्दा-ए-ग़ैब से पूरा फ़रमा। ऐ अल्लाह! इसकी मुश्किलों को आसान फ़रमा।

ऐ अल्लाह! इस दारुल उलूम के बानी (संस्थापक) हज़रत मौलाना मुफ़्ती मुहम्मद शफ़ी साहिब रहमतुल्लाहि अ़लैहि को जन्नतुल् फ़िरदौस में बुलन्द मुक़ामात अ़ता फ़रमा। ऐ अल्लाह! इस दारुल उलूम के साथ सहयोग करने वालों को दुनिया और आख़िरत में बेहतरीन बदला अ़ता फ़रमा। आमीन सुम्-म आमीन। ऐ अल्लाह हमारी इन सब दुआओं को क़बूल फ़रमा। आमीन।

रब्बना तक़ब्बल् मिन्ना इन्न-क अन्तस्समीउल् अ़लीम। व तुब् अ़लैना इन्न-क अन्तत्तव्वाबुर्रहीम। व सल्लल्लाहु तआ़ला अ़ला ख़ैरि ख़ल्क़िही मुहम्मदिंव्-व अ़ला आलिही व अस्हाबिही अज्मईन। आमीन। बिरह्मति-क या अर्हमर्राहिमीन।

وَاٰخِرُ دَعْوَانَآ اَنِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ

जस्टिस मोलाना मुफ़्ती मुहम्मद तक़ी साहिब उस्मानी

कुरआन करीम का

ख़त्म शरीफ़ और दुआ

ख़िताब

जस्टिस मौलाना मुफ़्ती मुहम्मद तक़ी उस्मानी

हिन्दी अनुवादः मुहम्मद इमरान क़ासमी

प्रकाशक

फ़रीद बुक डिपो (प्रा. लि.)

422, मटिया महल, उर्दू मार्किट, जामा मस्जिद

देहली-110006

☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆

नाम किताब	कुरआन करीम का ख़त्म शरीफ़ और दुआ
ख़िताब	मौलाना मुहम्मद तकी उस्मानी
हिन्दी अनुवाद	मुहम्मद इमरान क़ासमी
संयोजक	मुहम्मद नासिर ख़ान
तायदाद	2100
प्रकाशन वर्ष	मई 2004
कम्पोज़िंग	इमरान कम्प्यूटर्स मुज़फ़्फ़र नगर (0131-2442408)

>>>>>>>>>>>

प्रकाशक

फरीद बुक डिपो प्रा० लि०

422, मटिया महल, उर्दू मार्किट, जामा मस्जिद देहली-110006

फ़ोन आफ़िस, 23289786, 23289159 आवास, 23280786

विषय सूची

कुरआन करीम का ख़त्म शरीफ़

और दुआ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ٥

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ نَحْمَدُهٗ وَنَسْتَعِيْنُهٗ وَنَسْتَغْفِرُهٗ وَنُؤْمِنُ بِهٖ وَنَتَوَكَّلُ عَلَيْهِ
وَنَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنْ شُرُوْرِ اَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّاٰتِ اَعْمَالِنَا، مَنْ يَّهْدِهِ اللّٰهُ فَلَا مُضِلَّ
لَهٗ وَمَنْ يُّضْلِلْهُ فَلَا هَادِيَ لَهٗ وَنَشْهَدُ اَنْ لَّآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ
وَنَشْهَدُ اَنَّ سَيِّدَنَا وَنَبِيَّنَا وَمَوْلَانَا مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى
عَلَيْهِ وَعَلٰٓى اٰلِهٖ وَاَصْحَابِهٖ وَبَارَكَ وَسَلَّمَ تَسْلِيْمًا كَثِيْرًا ٥ اَمَّا بَعْدُ!

فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ٥ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ٥
اِنَّآ اَنْزَلْنٰهُ فِيْ لَيْلَةِ الْقَدْرِ ٥ وَمَآ اَدْرٰىكَ مَا لَيْلَةُ الْقَدْرِ ٥ لَيْلَةُ
الْقَدْرِ خَيْرٌ مِّنْ اَلْفِ شَهْرٍ ٥ تَنَزَّلُ الْمَلٰٓئِكَةُ وَالرُّوْحُ فِيْهَا بِاِذْنِ رَبِّهِمْ مِّنْ كُلِّ
اَمْرٍ ٥ سَلٰمٌ هِيَ حَتّٰى مَطْلَعِ الْفَجْرِ ٥ صَدَقَ اللّٰهُ مَوْلَانَا الْعَظِيْمُ ٥

(سورة القدر)

तमहीद

मोहतरम बुज़ुर्गों और अ़ज़ीज़ भाईयो! इस वक़्त कोई लम्बी-चौड़ी तक़रीर करना मक़सद नहीं है लेकिन अल्लाह तआ़ला

ने हमें और आपको एक बहुत बड़े इनाम से नवाज़ा है और एक बहुत बड़ा करम फ़रमाया है। इस वक़्त उस इनाम और करम पर शुक्र का इज़हार करना मक़सूद है और इस मौक़े से फ़ायदा उठाते हुए अल्लाह तआ़ला के सामने अपने मक़ासिद और हाजतों के लिए दुआ़ करना मक़सूद है।

बहुत बड़े इनाम से नवाज़ा है

वह इनाम यह है कि इस वक़्त अल्लाह तआ़ला ने अपने फ़ज़्ल व करम से हमें और आपको तरावीह के अन्दर कुरआन करीम मुकम्मल करने की सआ़दत (सौभाग्य) अ़ता फ़रमाई है। आज जबकि हमारी निगाहें और हमारे ख़्यालात माद्दा-परस्ती (भौतिकवाद) के माहौल में भटके हुए हैं। इस माहौल में कुरआन करीम की तिलावत और तरावीह की इस नेमत का सही-सही अन्दाज़ा हमें और आपको नहीं हो सकता कि यह अल्लाह तआ़ला की कितनी बड़ी नेमत हैं। लेकिन जिस वक़्त ये आँखें बन्द होंगी और अल्लाह तआ़ला की बारगाह में हाज़िरी होगी उस वक़्त अन्दाज़ा होगा कि यह कुरआन करीम की तिलावत, यह रोज़ा, यह तरावीह, ये नमाज़ें, यह तस्बीह, ये सब कितनी बड़ी दौलत हैं। इसलिए कि वह दुनिया ऐसी है कि वहाँ की क़रन्सी रुपया-पैसा नहीं है, बल्कि वहाँ की क़रन्सी ये नेकियाँ हैं और ये आमाल हैं। ये नमाज़ें, ये रोज़े, ये तस्बीहात, ये तरावीह, ये सज्दे, यह तिलावत, ये चीज़ें वहाँ काम आने वाली हैं। यह रुपया-पैसा वहाँ पर काम आने वाला नहीं।

"तरावीह" एक बेहतरीन इबादत

यूँ तो रमज़ान मुबारक को अल्लाह तआ़ला ने ऐसा बनाया है

और किसी हालत में इतना क़रीब नहीं होता। कुरआन करीम में सूरः अ़लक़ की आख़िरी आयत जो आयते सज्दा है, उसमें अल्लाह तआ़ला ने इरशाद फ़रमायाः

तर्जुमाः सज्दा करो और मेरे क़रीब आ जाओ।

(सूरः अ़लक़ आयत 12)

यह कितना प्यारा और मुहब्बत का जुमला है कि सज्दा करो और मेरे पास आ जाओ। इसलिए अल्लाह तआ़ला की बारगाह में निकटता हासिल करने का इससे बेहतर ज़रिया और कोई नहीं है कि इनसान सज्दे में चला जाए। जिस वक़्त बन्दे ने अल्लाह तआ़ला के सामने सज्दे में पेशानी (माथा) टेक दी तो उस दम सारी कायनात उस पेशानी के नीचे आ गई।

"नमाज़" मोमिन की मेराज है

हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को अल्लाह तआ़ला ने "मेराज" अ़ता फ़रमाई जिसमें आपको सातों आसमानों से भी ऊपर "सिद्रतुल्- मुन्तहा" से भी आगे पहुँचाया। जहाँ हज़रत जिब्राईल अ़लैहिस्सलाम भी आपका साथ न दे सके। उस मुक़ाम तक पहुँचाया। जब आप वापस तशरीफ़ लाने लगे तो हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने ज़बाने हाल से अल्लाह तआ़ला से यह दरख़्वास्त की ऐ अल्लाह! आपने मुझे तो अपनी नज़दीकी का यह मुक़ाम अ़ता फ़रमा दिया लेकिन मेरी उम्मत का क्या होगा? तो उस वक़्त अल्लाह तआ़ला ने आपकी उम्मत के लिए जो तोहफ़ा अ़ता फ़रमाया वह पाँच नमाज़ों का तोहफ़ा अ़ता फ़रमाया। और इन नमाज़ों में सज्दे का तोहफ़ा अ़ता फ़रमाया और यह

कि इसका हर-हर लम्हा रहमतों का लम्हा है। बरकतों का लम्हा है। लेकिन रमज़ान मुबारक में जो ख़ुसूसी इबादतें शरीअ़त ने मुक़र्रर कीं उनमें यह तरावीह की इबादत एक अ़जीब व ग़रीब शान रखती है। आ़म दिनों के मुक़ाबले में इन दिनों के अन्दर यह नमाज़ जनाब नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने सुन्नत क़रार दी है। हदीस शरीफ़ में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमायाः

तर्जुमाः अल्लाह तआ़ला ने तुम्हारे लिए रमज़ान के दिनों में रोज़े फ़र्ज़ किए और मैंने तुम्हारे लिए रमज़ान की रातों में खड़े होकर इबादत करने को सुन्नत क़रार दिया। (निसाई शरीफ़)

यह सुन्नत ऐसी है कि इसके नतीजे में और दिनों के मुक़ाबले में बीस रकअ़तें ज़्यादा पढ़ने की सआ़दत हासिल हो रही है, और बीस रकअ़तों का मतलब यह है कि हर ईमान वाले को रोज़ाना चालीस सज्दे ज़्यादा करने की तौफ़ीक़ हासिल हो रही है। और अगर पूरे महीने का हिसाब लगाया जाए और महीने को तीस दिन का शुमार किया जाए तो एक महीने में एक ईमान वाले को बारह सौ सज्दे ज़्यादा करने की तौफ़ीक़ अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से अ़ता हो रही है।

"सज्दा" एक बहुत बड़ी नेमत

और यह "सज्दा" ऐसी बड़ी नेमत है कि इस ज़मीन पर इससे ज़्यादा बड़ी नेमत कोई और नहीं हो सकती। हदीस शरीफ़ में नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इरशाद फ़रमाया कि बन्दा अल्लाह से जितना क़रीब सज्दे की हालत में होता है

ऐलान फ़रमा दिया गया कि "नमाज़ मोमिनों की मेराज है" अगरचे हमने आपको यहाँ बुलाकर मेराज अ़ता फ़रमाई लेकिन आपकी उम्मत के लिए यह ऐलान है कि जो बन्दा मेरे नज़दीक होना चाहता है वह जब सज्दे में सर रख देगा तो उसकी मेराज हो जाएगी। जब बन्दे ने सज्दे में अल्लाह तआ़ला के सामने सर रख दिया तो बस इससे बड़ी दौलत और कोई नहीं है।

अल्लाह मियाँ ने मुझे प्यार कर लिया

हमें तो इस दौलत के अ़ज़ीम होने का अन्दाज़ा नहीं है, इसलिए कि दिलों पर ग़फ़लत के पर्दे पड़े हुए हैं। जिन लोगों को अल्लाह तआ़ला इसकी लज़्ज़त और मिठास अ़ता फ़रमाते हैं उनको पता होता है कि यह सज्दा क्या चीज़ है। हज़रत मौलाना फ़ज़लुर्रहमान साहिब गंज-मुरादाबादी रहमतुल्लाहि अ़लैहि जो बड़े दर्जे के औलिया-अल्लाह में से गुज़रे हैं। एक बार हज़रत मौलाना अशरफ़ अ़ली थानवी रहमतुल्लाहि अ़लैहि उनकी ख़िदमत में हाज़िर हुए तो वह चुपके से कहने लगे कि मियाँ अशरफ़ अ़ली! क्या बताऊँ जब सज्दा करता हूँ तो ऐसा लगता है कि अल्लाह तआ़ला ने मुझे प्यार कर लिया। उनको सज्दे के अन्दर यह दौलत नसीब होती थी।

यह पेशानी एक ही चौखट पर टिकती है

हज़रत ख़्वाजा अ़ज़ीज़ुल् हसन साहिब मजज़ूब रहमतुल्लाहि अ़लैहि जो हज़रत हकीमुल उम्मत मौलाना अशरफ़ अ़ली थानवी के ख़ास ख़लीफ़ा थे, उनका एक शे'र है:

अगर सज्दे में सर रख दूँ ज़मीन को आसमाँ कर दूँ

बहरहाल! यह सज्दा मामूली चीज़ नहीं है। यह पेशानी किसी और जगह पर नहीं टिकती। यह पेशानी सिर्फ़ एक ही बारगाह में, एक ही चौखट पर, एक ही आस्ताने पर टिकती है। और उस आस्ताने पर टिकने के नतीजे में उसको जो निकटता की दौलत हासिल होती है उस दौलत के आगे सारी दुनिया की दौलतें हेच (बे-हक़ीक़त) हैं।

अल्लाह तआ़ला अपने कलाम की तिलावत सुनते हैं

हमारे हज़रत डॉक्टर अ़ब्दुल हई साहिब रहमतुल्लाहि अ़लैहि फ़रमाया करते थे कि रमज़ान मुबारक में अल्लाह तआ़ला ने हमें और आपको रोज़ाना अपनी नज़दीकी के चालीस मुक़ामात ज़्यादा अ़ता फ़रमाए हैं। हर ईमान वाले को इस तरावीह की बदौलत रोज़ाना अल्लाह की निकटता के चालीस मुक़ामात ज़्यादा हासिल हो रहे हैं। यह मामूली दौलत नहीं।

फिर इस तरावीह में ये अल्लाह की नज़दीकी के मुक़ामात तो थे ही साथ-साथ यह हुक्म दे दिया कि इस तरावीह में मेरा कलाम पढ़कर इसको पूरा करो। हदीस शरीफ़ में आता है कि अल्लाह तआ़ला किसी चीज़ को इतनी तवज्जोह के साथ नहीं सुनते जितनी तवज्जोह के साथ अपने कलाम की तिलावत को सुनते हैं। इसलिए तरावीह के मौक़े पर अल्लाह तआ़ला की रहमत मुतवज्जह होती है। अल्लाह तआ़ला की नज़दीकी हासिल हो रही होती है।

कुरआन शरीफ़ के ख़त्म के मौक़े पर दो काम करें

आज अल्हम्दु लिल्लाह कुरआन करीम पूरा हो गया। हमने

ग़फ़लत के आलम में सुनकर पूरा कर लिया। हदीस शरीफ़ में है कि एक-एक हर्फ़ पर दस-दस नेकियाँ लिखी जाती हैं। इसलिए यह मामूली नेमत नहीं है जो आज ख़त्मे कुरआन के मौक़े पर हमें और आपको हासिल हो रही है। इस नेमत का शुक्र अदा करो।

जब भी अल्लाह तआ़ला किसी इबादत की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाएँ तो बुज़ुर्गाने दीन का कहना है कि उस मौक़े पर दो काम करने चाहिएँ। एक यह कि उस इबादत की तौफ़ीक़ मिलने पर अल्लाह तआ़ला का शुक्र अदा करना चाहिए और यह कहना चाहिए कि ऐ अल्लाह! मैं तो इस क़ाबिल नहीं था मगर आपने अपने फ़ज़्ल से मुझे इस इबादत की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमा दी। दूसरे यह कि इस्तिग़फ़ार करो और यह कहो कि ऐ अल्लाह! आपने तो मुझे इबादत की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाई थी लेकिन इस इबादत का जो हक़ था वह मुझसे अदा न हो सका। इस इबादत के जो हुक़ूक़ और आदाब थे वह मैं पूरे न कर सका। इसमें मुझसे कोताहियाँ और ग़लतियाँ हुईं। ऐ अल्लाह! इस पर मुझे माफ़ फ़रमा।

इबादत से इस्तिग़फ़ार

कुरआन करीम ने "सूरः ज़ारियात" में अल्लाह के बन्दों की बड़ी तारीफ़ फ़रमाई है। चुनाँचे फ़रमायाः

"यानी अल्लाह तआ़ला के नेक बन्दे रात के वक़्त बहुत कम सोते हैं बल्कि रात के अकसर हिस्से में अल्लाह की इबादत में खड़े रहते हैं। और जब सेहरी का वक़्त हो जाता है तो उस

वक़्त इस्तिग़फ़ार करते हैं और अल्लाह तआ़ला से मग़फ़िरत तलब करते हैं।" (सूरः ज़ारियात आयत 17, 18)

हज़रत आ़यशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा ने पूछा या रसूलल्लाह! यह इस्तिग़फ़ार (मग़फ़िरत और माफ़ी माँगने) का क्या मौक़ा है? इस्तिग़फ़ार तो उस वक़्त होता है जब किसी से कुछ गुनाह हुआ हो। कोई ग़लती हुई हो। यह तो सारी रात इबादत में अल्लाह तआ़ला के सामने खड़े रहे तो अब सुबह के वक़्त इस्तिग़फ़ार क्यों कर रहे हैं? जवाब में नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि ये लोग अपनी इबादत से इस्तिग़फ़ार कर रहे हैं कि या अल्लाह! हमने इबादत तो की लेकिन इबादत का जो हक़ था वह हम से अदा न हुआ। इसलिए अपनी इस कोताही और ग़फ़लत पर इस्तिग़फ़ार कर रहे हैं।

इबादत का हक़ कौन अदा कर सकता है?

इसलिए जिस इबादत की तौफ़ीक़ हो जाए उस तौफ़ीक़ पर अल्लाह तआ़ला का शुक्र अदा करो और अपनी कोताही पर इस्तिग़फ़ार करो कि या अल्लाह! इबादत का हक़ हमसे अदा न हो सका। और कौन शख़्स है जो इबादत का हक़ अदा कर सके? जबकि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम का यह हाल था कि सारी रात इस तरह खड़े होकर इबादत करते थे कि पाँव पर वरम (सूजन) आ जाता था। इसके बावजूद आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम फ़रमाते थे कि:

"हम इबादत का हक़ अदा न कर सके।"

इसलिए हर इबादत के मौक़े पर शुक्र भी करो और उसके

साथ-साथ इस्तिग़फ़ार भी करो।

हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु का क़ौल

मैंने अपने शैख़ हज़रत डॉक्टर अब्दुल हई साहिब रहमतुल्लाहि अलैहि से हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु का एक क़ौल सुना कि हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाया करते थे कि जब कोई बन्दा इबादत करने के बाद यह कहता है "अल्हम्दु लिल्लाह, अस्तग़्फ़िरुल्लाह" तो शैतान कहता है कि इसने मेरी कमर तोड़ दी।

वजह इसकी यह है कि शैतान का हमला दो ही तरह से होता है, या तो इस तरह हमला करता है कि इबादत के नतीजे में इनसान के दिल में गुरूर पैदा कर देता है कि मैंने बड़ी इबादत कर ली। मुझसे बड़ा काम हो गया और मैं तो आला मुक़ाम तक पहुँच गया।

जब दिल में यह गुरूर पैदा हुआ तो सारी इबादत बेकार हो गयी। इस गुरूर का रास्ता लफ़्ज़ "अल्हम्दु लिल्लाह" से बन्द हो गया। और इसके ज़रिये यह इक़रार कर लिया कि जो इबादत मैंने अदा की वह असल में मेरे बाज़ू की कुव्वत का करिश्मा नहीं है, बल्कि ऐ अल्लाह! यह इबादत आपके करम और तौफ़ीक़ से अन्जाम पाई है।

रमज़ान की इबादतों पर शुक्र अदा करो

कितने लोग ऐसे हैं कि रमज़ान मुबारक आया और चला गया लेकिन इसके बावजूद उनके घर में पता नहीं चला कि कब रमज़ान मुबारक आया था और कब चला गया। लेकिन अल्लाह

तआ़ला का फ़ज़्ल व करम है कि अल्लाह तआ़ला ने हमें उन लोगों में से नहीं बनाया। अल्लाह तआ़ला का करम है कि उसने हमारी सलाहियत के अनुसार हमीं जैसी-तैसी इबादत करने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाई। रोज़े रखने की, तरावीह पढ़ने की, तिलावत करने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाई। इस पर शुक्र अदा करो और कहो "अल्हम्दु लिल्लाह" ऐ अल्लाह! आपका करम और शुक्र है कि आपने हमें यह इबादत करने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाई।

बहरहाल! शैतान का एक हमला तो दिल में घमण्ड पैदा करने के ज़रिये होता है।

अपनी कोताहियों पर इस्तिग़फ़ार करो

शैतान का दूसरा हमला यह होता है कि वह इनसान के दिल में यह ख़्याल डालता है कि तेरी नमाज़ क्या? तेरा रोज़ा क्या? तूने नमाज़ क्या पढ़ी, तूने टक्करें मारीं और ग़फ़लत के आ़लम में नमाज़ पढ़ ली और रोज़ा रख लिया। तूने इबादत का हक़ अदा नहीं किया। यह ख़्याल डालकर उसके अन्दर मायूसी पैदा कर देता है। इस मायूसी का तोड़ "अस्तग़्फ़िरुल्लाह" है। यानी बेशक इबादत के अदा करने में मेरी तरफ़ से कोताही हुई लेकिन मैं तो कोताहियों का पुलिन्दा हूँ। ऐ अल्लाह! इन कोताहियों की तरफ़ से मैं आपके सामने इस्तिग़फ़ार करता हूँ। और इस्तिग़फ़ार की ख़ासियत यह है कि जिस कोताही से इस्तिग़फ़ार किया जाए अल्लाह तआ़ला उस कोताही को नामा-ए-आमाल से मिटा देते हैं। इसलिए जो शख़्स इस्तिग़फ़ार करने का आ़दी हो उसकी कोताहियाँ और गुनाह नामा-ए-आमाल से मिटते रहते हैं।

इसलिए फ़रमाया कि जो शख़्स इबादत करने के बाद ये दो कलिमात ज़बान से अदा कर ले- एक "अल्हम्दु लिल्लाह" और दूसरे "अस्तग़्फ़िरुल्लाह"। ऐ अल्लाह! आपकी तौफ़ीक़ पर शुक्र है और मेरी कोताहियों पर इस्तिग़फ़ार है। तो उसके बाद वह इबादत अल्लाह तआ़ला की बारगाह में इन्शा-अल्लाह क़बूल हो जाएगी और शैतान की कमर टूट जाएगी।

उनकी रहमत पर नज़र रहनी चाहिए

अल्लाह का शुक्र है! अल्लाह तआ़ला ने हमें अपने फ़ज़्ल व करम से रमज़ान मुबारक में इबादत करने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाई। हमारी तरफ़ से ग़फ़लत ही ग़फ़लत है। कोतही ही कोताही है। लेकिन बक़ौल हज़रत डॉक्टर अ़ब्दुल हई साहिब के, हम अपनी ग़फ़लत और कोताही को देखें या उनकी रहमत को देखें। अरे उनकी रहमत ऐसी बड़ी और ज़बरदस्त है कि जिसकी कोई हद व सीमा नहीं। उसके मुक़ाबले में हम अपनी कोताहियों को क्यों लेकर बैठ जाएँ और इसका मुराक़बा क्यों करें? अरे हम अल्लाह की रहमत का मुराक़बा (ध्यान) करें।

बहरहाल! आज हम यहाँ दो काम करने के लिए जमा हुए हैं- एक उसकी तौफ़ीक़ पर शुक्र अदा करने के लिए और दूसरे अपनी कोताहियों पर इस्तिग़फ़ार करने के लिए। इन्शा-अल्लाह अगर हमने ये दो काम कर लिए तो फिर अल्लाह तआ़ला की रहमत से उम्मीद रखनी चाहिए कि अल्लाह तआ़ला ने जो अनवार व बरकतें, जो तजल्लियात, जो रहमतें और जो अज्र व सवाब इस तरावीह में और क़ुरआन करीम की तिलावत में रखा

है इन्शा-अल्लाह हमें और आपको उससे मेहरूम नहीं फ़रमाएँगे।

दुआ की कबूलियत के मौके जमा हैं

आज की रात रमज़ान मुबारक की रात है। अ़श्रा-ए-अख़ीरा (आख़िरी दशक) की भी रात है और अ़श्रा-ए-अख़ीरा की भी 'ताक़' रात है (ताक़ रात उसको कहते हैं जो बे-जोड़ हो जैसे इक्कीस, तैईस, पच्चीस, सत्ताईस वग़ैरह) जिसमें शबे क़द्र होने की भी उम्मीद है, और कुरआन करीम के ख़त्म का मौक़ा भी है। इसलिए अल्लाह तआ़ला की रहमत से उम्मीद है कि इस मौके पर जो दुआ़ की जाएगी इन्शा-अल्लाह तआ़ला ज़रूर क़बूल होगी। हदीस शरीफ़ में आता है कि कभी-कभी अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से रहमत की हवाएँ चलती हैं और उन हवाओं के चलने के दौरान जो बन्दा अल्लाह तआ़ला की तरफ़ रुजू करता है तो अल्लाह तआ़ला की रहमत उसको ढाँप लेती है। उम्मीद है कि ये लम्हे भी अल्लाह तआ़ला की रहमत की हवाओं के लम्हे हैं। इन्शा-अल्लाह जो दुआ़ की जाएगी वह दुआ़ कबूल होगी।

ख़ास तवज्जोह से दुआ़ करें

अब हम सब मिलकर एहतिमाम (ख़ास तवज्जोह और ध्यान) के साथ अल्लाह तआ़ला से दुआ़ करते हैं और इस दुआ़ के अन्दर अपनी ज़ाती हाजतों को भी अल्लाह तआ़ला से माँगें, अपने यार-रिश्तेदारों के लिए भी दुआ़ करें। अपने दोस्त व अहबाब के लिए भी दुआ करें। अपने मुल्क व क़ौम के लिए भी दुआ़ करें। पूरी मुस्लिम दुनिया इस समय दुश्मनों से घिरी हुई है इसके लिए दुआ़ करें कि अल्लाह तआ़ला इन दुश्मनों से इस्लाम

को बचाए। जितने लोग हैं जो इस वक़्त मुख़्तलिफ़ मुल्कों में अल्लाह तआला के रास्ते में दीन की ख़िदमत और इस्लाम के लिए कोशिश कर रहे हैं, उनके लिए दुआएँ फ़रमाएँ कि अल्लाह तआला उनकी मुश्किलों को दूर फ़रमाए और उनको कामयाबी अता फ़रमाए। आमीन।

सामूहिक दुआ भी जायज़ है

दुआ में अफ़ज़ल यह है कि हर आदमी व्यक्तिगत तौर पर दुआ करे। बस वह हो और उसका अल्लाह हो। तीसरे आदमी का बीच में वास्ता न हो, और इज्तिमाई (सामूहिक) दुआ सुन्नत नहीं है। लेकिन जहाँ मुसलमान जमा हों और वहाँ सब मिलकर इकट्ठे दुआ कर लें तो यह भी कोई नाजायज़ बात नहीं है, इसलिए कि कभी-कभी आदमी के दिल में बहुत-सी दुआएँ नहीं आतीं तो वह दूसरे की दुआ पर "आमीन" कह देता है तो अल्लाह तआला उसको भी उस दुआ की बरकतें अता फ़रमा देते हैं। इसलिए इस वक़्त इज्तिमाई (सामूहिक) दुआ की जा रही है, इसमें पहले वे दुआएँ की जाएँगी जो हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से साबित हैं, उसके बाद उर्दू में अपनी हाजतों की दुआएँ होंगी, उसके बाद हर शख़्स अपनी-अपनी हाजत अल्लाह तआला से माँगेगा।

दुआ से पहले दुरूद शरीफ़

सब हज़रात पहले तीन-तीन बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लें।

अल्लाहुम्-म सल्लि अला मुहम्मदिंव्-व अला आलि मुहम्मदिन् कमा सल्लै-त अला इब्राही-म व अला आलि इब्राही-म इन्न-क

हमीदुम् मजीद।

अल्लाहुम्-म सल्लि अ़ला मुहम्मदिंव्-व अ़ला आलि मुहम्मदिन् कमा सल्लै-त अ़ला इब्राही-म व अ़ला आलि इब्राही-म इन्न-क हमीदुम् मजीद।

अल्लाहुम्-म सल्लि अ़ला मुहम्मदिंव्-व अ़ला आलि मुहम्मदिन् कमा सल्लै-त अ़ला इब्राही-म व अ़ला आलि इब्राही-म इन्न-क हमीदुम् मजीद।

अ़रबी में दुआ़एँ

रब्बना ज़लम्ना अन्फ़ु-सना व इल्लम् तग़्फ़िर् लना व तर्हम्ना ल-नकूनन्-न मिनल् ख़ासिरीन। रब्बना आतिना फ़िद्दुन्या ह-स-नतंव्-व फ़िल् आख़ि-रति ह-स-नतंव्-व क़िना अ़ज़ाबन्नार। रब्बना ला तुज़िग़् क़ुलूबना बअ्-द इज़् हदैतना व हब् लना मिल्-लदुन्-क रह्मतन् इन्न-क अन्तल् वह्हाब।

अल्लाहुम्-म इन्ना नस्तईनु-क अ़ला ताअ़ति-क। अल्लाहुम्-म अ-इन्ना अ़ला ज़िक्रि-क व शुक्रि-क व हुस्नि इबादति-क। अल्लाहुम्-म इन्ना नस्अलु-क तमामल् आ़फ़ियति व नस्अलु-क दवामल् आ़फ़ियति व नस्अलुकश्शुक्-र अ़लल् आ़फ़ियति। अल्लाहुम्मक्फ़िना बि-हलालि-क अ़न् हरामि-क, व अग़्निना बिफ़ज़्लि-क अ़म्मन् सिवा-क या अर्हमर्राहिमीन। अल्लाहुम्-म इन्ना नस्अलुकत्तौफ़ी-क लिमहाब्बि-क मिनल् आमालि व सिद्क़त्तवक्कुलि अ़लै-क व हुस्नज़्ज़न्नि बि-क। अल्लाहुम्मफ़्तह् मसामि-अ़ क़ुलूबिना लिज़िक्रि-क वर्ज़ुक़्ना ताअ-त-क व ताअ़-त रसूलि-क व अ़-मलन् बिकिताबि-क। अल्लाहुम्मज्अ़ल्ना नख़्शा-क क-अन्ना

नरा-क अ-बदन् हत्ता नल्क़ा-क व अस्इद्ना बितक़्वा-क व ला तुश्क़िना बिमअ्सियति-क या अर्हमर्राहिमीन।

अल्लाहुम्मक़्सिम् लना मिन् ख़श्यति-क मा तहूलु बिही बैनना व बै-न मआसी-क। व मिन् ताअ़ति-क मा तुबल्लिग़ुना बिही जन्नत-क। व मिनल् यक़ीनि मा तुहव्विनु बिही अ़लैना मसाइबद्दुन्या। व मत्तिअ्ना बिअस्माअ़िना व अब्सारिना व कुव्वातिना मा अह्यैतना। वज्अ़ल्हुल् वरि-स मिन्ना। वज्अ़ल् सारना अ़ला मन् ज़-ल-मना। वन्सुर्ना अ़ला मन् आ़दाना। व ला तज्अ़ल् मुसीब-तना फ़ी दीनिना व ला तज्अ़लिद्दुन्या अक्ब-र हम्मिना व ला मब्ल-ग़ इल्मिना व ला ग़ाय-त रग़्बतिना व ला तुसल्लितु अ़लैना मन् ला यर्हमुना।

अल्लाहुम्-म ज़िद्ना व ला तन्क़ुस्ना व अक्रिम्ना व ला तुहिन्ना व अअ्तिना व ला तह्रिम्ना व आसिर्ना व ला तुअ्सिर् अ़लैना। व अर्ज़िना वर्-ज़ अ़न्ना या अर्हमर्राहिमीन। अल्लाहुम्-म आनिस् वह्श-तना फ़ी क़ुबूरिना। अल्लाहुम्मर्हम्ना बिल्-कुरआनिल् अ़ज़ीमि वज्अ़ल्हु लना इमामंव्-व नूरंव्-व हुदंव्-व रह्मतन्। अल्लाहुम्-म ज़क्किर्ना मिन्हु मा नसीना व अ़ल्लिम्ना मिन्हु मा जहिल्ना वर्ज़ुक़्ना तिलाव-तहू आनाअल्लैलि व आनाअन्नहारि वज्अ़ल्हु लना हुज्जतंय्-या रब्बल् आ़लमीन।

अल्लाहुम्मज्अ़ल् कुरआनल् अ़ज़ी-म रबी-अ़ क़ुलूबिना व जिला-अ अह्ज़ानिना या अर्हमर्राहिमीन। अल्लाहुम्-म इन्ना नस्अलु-क अन् तुख़ल्लितल् कुरआ-न बिलुहूमिना व दिमाइना व अस्माइना व अब्सारिना व तस्तअ्मिलु बिही अज्सादना बिहौलि-क

व कुव्वति-क या अर्हमर्राहिमीन।

या अल्लाहु या अर्हमर्राहिमी-न, या ग़यासल् मुस्तग़ीसी-न, या अमानल् मुस्तजीरी-न, या मुजी-ब दअ्वतिल् मुज़्तर्री-न, रहमानद्दुन्या व रहीमहा, इर्‌हम्ना बिरह्मतिन् तुग़नीना बिहा अ़न् रह्मति मन् सिवा-क।

अल्लाहुम्-म ला तज्अ़ल्ना बिदुआइ-क शकिय्या। व कुन् लना रऊफ़न् रहीमन्। या ख़ैरल् मस्ऊली-न, व या ख़ैरल् मुअ्ती-न इलै-क नश्कू ज़ुअ्-फ़ कुव्वतिना व क़िल्ल-त हीलतिना। रब्बना तक़ब्बल् दअ्व-तना वग़्सिल् हौब-तना व अजिब् दअ्व-तना व सब्बित् हुज्ज-तना व सद्दिद् लिसानना या अर्हमर्राहिमीन।

अल्लाहुम्-म इन्ना नस्अलु-क मिन् ख़ैरि मा स-अ-ल-क मिन्हु अ़ब्दु-क व नबिय्यु-क मुहम्मदुन् सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्ल-म व नऊज़ु बि-क मिन् शर्रि मस्तआ़ज़-क मिन्हु अ़ब्दु-क व नबिय्यु-क मुहम्मदुन् सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम। रब्बना तक़ब्बल् मिन्ना इन्न-क अन्तस्समीउल् अ़लीम। व तुब् अ़लैना इन्न-क अन्तत्तव्वाबुर्रहीम। व सल्लल्लाहु तआ़ला अ़ला ख़ैरि ख़ल्क़िही मुहम्मदिंव्-व अ़ला आलिही व अस्हाबिही अज्मईन। आमीन। बिरह्मति-क या अर्हमर्राहिमीन।

उर्दू में दुआएँ

या अर्हमर्राहिमीन! अपने फ़ज़्ल व करम से और अपनी रहमत से हमारे तमाम गुनाहों को माफ़ फ़रमा। ऐ अल्लाह! अपनी रहमत से हमारी तमाम ख़ताओं को माफ़ फ़रमा। ऐ अल्लाह! हमारी तमाम कोताहियों को माफ़ फ़रमा। ऐ अल्लाह! हमारे तमाम

अगले-पिछले, छोटे-बड़े, खुले-छुपे, हर तरह के गुनाहों को माफ़ फ़रमा। ऐ अल्लाह! अपनी रहमत से हमको और हमारे घर वालों को और हमारे मुताल्लिक़ीन और अहबाब सबको अपनी मग़फ़िरते कामिला अ़ता फ़रमा। ऐ अल्लाह! आपने रमज़ान मुबारक के महीने में जिन बेशुमार इनसानों की मग़फ़िरत के वायदे फ़रमाए हैं, ऐ अल्लाह! अपनी रहमत से हमें भी उनमें शामिल फ़रमा। ऐ अल्लाह! हमारे इस्तेहक़ाक़ (पात्रता) पर नज़र न फ़रमा, अपनी रहमत पर नज़र फ़रमा।

ऐ अल्लाह! अपने फ़ज़्ल व करम से मग़फ़िरते कामिला अ़ता फ़रमा। ऐ अल्लाह! रमज़ान के आख़िरी दशक में जिन लोगों को आप जहन्नम से रिहाई का परवाना अ़ता फ़रमाते हैं, ऐ अल्लाह! हम सबको और हमारे घर वालों को और मुताल्लिक़ीन और अहबाब को उनमें शामिल फ़रमा। या अर्हमर्राहिमीन! जो अनवार और बरकतें आपने इस मुबारक महीने में रखी हैं वे सब हमें अ़ता फ़रमा और उनसे मेहरूम न फ़रमा।

ऐ अल्लाह! इस मुबारक महीने में जिन-जिन इबादतों की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाई यह सब आपका करम व इनाम है। ऐ अल्लाह! अपनी रहमत से उनको क़बूल फ़रमा। और जो कोताहियाँ हो गईं अपनी रहमत से उनको माफ़ फ़रमा।

ऐ अल्लाह! हमारी तरावीह को क़बूल फ़रमा, तिलावते कुरआने करीम को अपनी रहमत से क़बूल फ़रमा और जो ज़िक्र की तौफ़ीक़ हुई अपनी रहमत से उसको क़बूल फ़रमा। ऐ अल्लाह! रमज़ान की जो बाक़ी घड़ियाँ हैं उनसे सही मायने में

फ़ायदा उठाने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमा। उन घड़ियों में गुज़रे हुए की तलाफ़ी की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमा।

ऐ अल्लाह! अपने फ़ज़्ल व करम से तमाम मौजूद हज़रात को उनके तमाम जायज़ मक़ासिद में कामयाबी अ़ता फ़रमा। ऐ अल्लाह! जो लोग अपनी- अपनी हाजतें लेकर आए हैं अपनी रहमत से उन सबको पूरा फ़रमा। ऐ अल्लाह! हम में और हमारे मुताल्लिक़ीन और अहबाब में जो-जो बीमार हैं उन सबको अपनी रहमत से शिफ़ा-ए-कामिला अ़ता फ़रमा। ऐ अल्लाह! उनको तन्दुरुस्ती अ़ता फ़रमा। ऐ अल्लाह! जो तंगदस्त हैं उनकी तंगदस्ती को दूर फ़रमा। ऐ अल्लाह! जो मोहताज और ज़रूरत-मन्द हैं उनकी ज़रूरत और मोहताजी दूर फ़रमा। ऐ अल्लाह! जो क़र्ज़ में फंसे हुए हैं उनके क़र्ज़ों की अदायगी का सामान फ़रमा। ऐ अल्लाह! जो बेरोज़गार हैं उनको रोज़गार अ़ता फ़रमा। ऐ अल्लाह! जो बे-औलाद हैं उनको नेक औलाद अ़ता फ़रमा।

या अर्हमर्राहिमीन! जो-जो दुआ़एँ इस मुबारक महीने में माँगने की तौफ़ीक़ हुई अपनी रहमत से उन सारी दुआ़ओं को क़बूल फ़रमा।

ऐ अल्लाह! इस रमज़ान के दिनों में और रातों में जो दुआ़एँ करने की हमें तौफ़ीक़ हुई ऐ अल्लाह! उन सब दुआ़ओं को क़बूल फ़रमा। ऐ अल्लाह! जो हाजतें हमारे दिलों में थीं और हम उनको आप से नहीं माँग सके उनको क़बूल फ़रमा। ऐ अल्लाह! इस रमज़ान के महीने में आपके नेक बन्दों ने जहाँ कहीं जो दुआ़एँ

माँगीं और वे दुआएँ हमारे हक़ में मुनासिब और बेहतर हों ऐ अल्लाह! अपनी रहमत से उनको भी हमारे हक़ में कबूल फ़रमा। ऐ अल्लाह! किसी रहमत से मेहरूम न फ़रमा।

या अर्हमर्राहिमीन! अपने फ़ज़्ल व करम से इस क़ुरआन करीम को जिन-जिन लोगों ने पढ़कर ख़त्म किया उनको दुनिया व आख़िरत में बेहतरीन बदला अ़ता फ़रमा। उनको इस क़ुरआन करीम के अनवार व बरकतें अ़ता फ़रमा। ऐ अल्लाह! सुनने वालों को भी इसकी बरकतों से नवाज़ दे।

ऐ अल्लाह! अपने कलिमे को सरबुलन्द फ़रमा। ऐ अल्लाह! आ़लमे इस्लाम दुश्मनों के जिस शिकन्जे में है अपनी रहमत से उस शिकन्जे को तोड़ दे। ऐ अल्लाह! मुसलमानों को सरबुलन्दी अ़ता फ़रमा, इज़्ज़त व शौकत अ़ता फ़रमा। अपने दीन की तरफ़ लौटने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमा। ऐ अल्लाह! अपनी रहमत से दिलों को फेर दे, दिलों में दीन की बड़ाई और मुहब्बत पैदा फ़रमा और दीन पर चलने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमा।

ऐ अल्लाह! सब कुछ आपके क़ब्ज़ा-ए-कुदरत में है। दिल भी और दिमाग़ भी आपके क़ब्ज़ा-ए-कुदरत में है। आमाल भी आपके क़ब्ज़ा-ए- कुदरत में हैं। हमारे दिलों हमारे दिमाग़ों और हमारे आमाल को दीन के रुख़ पर डाल दे। ऐ अल्लाह! अपनी रहमत से इस्लाम को सरबुलन्द फ़रमा। मुसलमानों को सरबुलन्द फ़रमा। ऐ अल्लाह! तमाम मौजूद हज़रात की हाजतों को पूरा फ़रमा। उनकी दिली मुरादों को पूरा फ़रमा।

ऐ अल्लाह! जिन-जिन लोगों ने हमसे दुआ के लिए कहा है

उन सब की दिली मुरादों को पूरा फ़रमा।

ऐ अल्लाह! अपनी रहमत से इस दारुल उलूम को ज़ाहिरी और बातिनी तरक़्क़ी अ़ता फ़रमा। ऐ अल्लाह! इस दारुल उलूम को दीन की ख़िदमत की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमा। ऐ अल्लाह! यहाँ के उस्तादों और तालिब-इल्मों और मुलाज़िमीन को सच्चाई और इख़्लास अ़ता फ़रमा। ऐ अल्लाह! इस दारुल उलूम को दीन की ख़िदमत के लिए क़बूल फ़रमा। ऐ अल्लाह! यहाँ से आपके दीन के ख़ादिम और अल्लाह वाले पैदा फ़रमा। दीन पर अ़मल करने वाले पैदा फ़रमा। ऐ अल्लाह! इस दारुल उलूम के तमाम मन्सूबों को आ़फ़ियत और सहूलियत के साथ पर्दा-ए-ग़ैब से पूरा फ़रमा। ऐ अल्लाह! इसकी मुश्किलों को आसान फ़रमा।

ऐ अल्लाह! इस दारुल उलूम के बानी (संस्थापक) हज़रत मौलाना मुफ़्ती मुहम्मद शफ़ी साहिब रहमतुल्लाहि अ़लैहि को जन्नतुल् फ़िरदौस में बुलन्द मुक़ामात अ़ता फ़रमा। ऐ अल्लाह! इस दारुल उलूम के साथ सहयोग करने वालों को दुनिया और आख़िरत में बेहतरीन बदला अ़ता फ़रमा। आमीन सुम्-म आमीन। ऐ अल्लाह हमारी इन सब दुआओं को क़बूल फ़रमा। आमीन।

रब्बना तक़ब्बल् मिन्ना इन्न-क अन्तस्समीउल् अ़लीम। व तुब् अ़लैना इन्न-क अन्तत्तव्वाबुर्रहीम। व सल्लल्लाहु तआ़ला अ़ला ख़ैरि ख़ल्क़िही मुहम्मदिंव्-व अ़ला आलिही व अस्हाबिही अज्मईन। आमीन। बिरह्मति-क या अर्हमर्राहिमीन।

وَاٰخِرُ دَعْوَانَآ اَنِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ